आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 06 | उदयपुर रविवार 01 अप्रेल 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

समस्या का समाधान पुरुषार्थ और संकल्प से

- आचार्य महाप्रज्ञ -

मानसिक अवस्थाएं दो प्रकार की होती हैं। एक अवस्था है प्रफुल्लता की और दूसरी है उदासी की। एक खिला और दूसरा मुरझाया हुआ फूल। विकसित फूल सबको भाता है। मुरझाया अच्छा नहीं लगता, बेचैनी पैदा कर देता है। प्रफुल्लता या प्रसन्नता महत्वपूर्ण है किन्तु टिक नहीं पाती।

समाज, परिवार तथा व्यक्ति का आन्तरिक वातावरण प्रसन्नता को टिकने नहीं देते। उदासी मानसिक विकार है। डिप्रेशन एक बड़ा रोग है। उदास व्यक्ति अपनी क्षमताओं का ठीक से उपयोग नहीं कर सकता। उसकी शक्तियां मुरझा जाती हैं। क्षीण हो सिकुड़ जाती हैं। प्रसन्न रहने वाला अपनी शक्तियों का सही उपयोग कर सकता है।

उदासी स्वयं एक समस्या है। इसका समाधान स्वयं खोजें। स्वयं सुलझाएं। दूसरों के पास जाकर समस्या का समाधान पूछेंगे तो उत्तर मात्र मिलेगा। उदासी मिटेगी नहीं। समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रहेगी। किसी ने बौद्धिक प्रश्न किया और उसे बौद्धिक उत्तर मिला। उसका बौद्धिक समाधान हो गया किन्तु उदासी बौद्धिक समस्या नहीं है, मानसिक समस्या है। ऐसे में भोग तो आप रहे हैं और समाधान कोई दूसरा दे, यह कैसे सम्भव होगा? ध्यान में जाकर उसके समाधान का उपाय पा सकते हैं। भारतीय दर्शन का यह महत्वपूर्ण सूत्र है कि प्राणी प्रवृत्ति से बंधता है और निवृत्ति से मुक्त होता है। प्रवृत्ति बांधती है और निवृत्ति मुक्त करती है। प्रश्न है, आदमी प्रवृत्ति को छोड़ नहीं सकता तो उसके लिए निवृत्ति संभव नहीं है तो मुक्ति कैसे संभव होगी?

प्रवृत्ति हुई और चली गई जैसे हवा का झोंका आया और चला गया। पीछे कोई संस्कार नहीं छोड़ा तो वह प्रवृत्ति बन्धेगी नहीं। हमारी प्रत्येक प्रवृत्ति के पीछे संस्कार रह जाता है। संस्कार का रहना ही बन्धना नहीं प्रवृत्ति वीतराग भी करता है और अ-वीतराग भी। वीतराग बन्धता नहीं, अ-वीतराग या रागी बन्धता है।

भींत गीली है। मिट्टी फेंकी। वह चिपकेगी। भींत सूखी है। मिट्टी फेंकी। वह नीचे गिर जायेगी। गीलापन पकड़ता

है, सूखापन नहीं। बंधन को टिकाता है राग। अराग बंधन को नहीं टिका पाता। इसलिए दोष प्रवृत्ति का नहीं होता। दोष होता है प्रवृत्ति के पीछे रह जाने वाले संस्कार का। संस्कार का होना और न होना, यह मूल कारण है बंधन का और बंधन मुक्ति का।

दो साधक जा रहे थे। रास्ते में नाला आ गया। किनारे पर एक युवती बैठी थी पर पानी से डरती थी। उसने साधकों से कहा, मुझे उस पार पहुंचा दो। एक हिचकिचाया। दूसरे ने युवती को कंधों पर बिठा कर उस पार पहुंचा दिया। युवती अपनी दिशा में चली गई और साधक अपनी दिशा में चल पड़ा। दूसरा साधक भी पहुंच गया। दोनों आश्रम में चले गये। युवती को न छूने वाले साधक के मन में युवती की बात बार-बार उभर रही थी। उसने पहले साधक से दो-चार बातें कही कि तूने युवती को छूकर अच्छा नहीं किया। वह साधक बोला, अरे! मैं तो उस युवती को कंधे से उतार कभी का भूल गया हूं और तू उसे अभी सिर पर लिए घूम रहा है।

प्रवृत्ति चली जाती है पर प्रवृत्ति का संस्कार नहीं जाता। संस्कार आदमी को जकड़ देता है। प्रवृत्ति स्वाभाविक और राग रहित हो कि पीछे संस्कार न छूटे। व्यक्ति चाहे खाये, पीए, घूमे, बैठे, बातचीत करे, कपड़ा पहने, मकान में रहे, वन में रहे, प्रवृत्ति हो पर संस्कार न छूटे। स्वयं की समस्या को स्वयं सुलझाएं। दूसरे सहयोगी बन सकते हैं, मार्ग सुझा सकते हैं किन्तु प्रत्येक आदमी को स्वयं की समस्या स्वयं ही सुलझानी होती है। संत तुकाराम के पास एक व्यक्ति आया। वह अफीम खाता था। उसने संत से कहा, मैं अफीम छोड़ना चाहता हूं। छोड़ने का प्रयत्न करता हूं पर छूटती नहीं। संत ने कहा, कोई बात नहीं है। जितनी खा रहे हो, उतनी खाते जाओ पर साथ-साथ एक काम करो। एक कोयला साथ में रखो और प्रतिदिन अफीम खाने के बाद उस कोयले से भींत पर एक लकीर खींचते रहो। जिस दिन लकीर खींचने के लिए कोयला न रहे, उसी दिन से अफीम खाना बन्द कर देना। उसने संत की यह बात स्वीकार कर ली। घर गया। प्रतिदिन अफीम खाता और एक लकीर कोयले से भींत पर लगा देता। दस-पन्द्रह दिनों में कोयला घिस गया। उसने अफीम खाना छोड़ दिया। यह उपाय कारगर हुआ। उपाय कोई भी सुझा सकता है पर करना स्वयं को ही होता है। यदि स्वयं का पुरुषार्थ और संकल्प नहीं जुड़ता है तो समस्या का समाधान नहीं हो पाता।

आसन से ऊपर उठे गुरुदेव को ज्योतिर्विद बने देखा : दिनेश मुनि

श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि से डॉ. महेन्द्र भानावत की लम्बी बातचीत के प्रमुख अंश

उपाध्याय पुष्कर मुनि अध्यात्म साधना के उत्कृष्ट साधक थे। यह साधना मौन एवं अनिर्वचनीय होती है। कथनीय भी नहीं होती है, गुप्त होती है। इसका फल सकारात्मक भावों की पूर्णता लिए होता है। साधक ही मौन होता है तब उसकी गुंडी बंद रहती है। अति निकटस्थ व्यक्ति को उसकी भनक भर लग सकती है। आचार्य देवेन्द्र मुनि के अन्तेवासी शिष्य श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि ने बताया कि उपाध्यायश्री के साथ 20 वर्ष तक विचरण करते हुए उन्हें जो अनुभूतियां हुईं वे आज भी उनके लिए अत्यंत रहस्यमय एवं चमत्कारिक बनी हुई हैं। इसके लिए दो-तीन घटनाओं का उल्लेख समीचीन जान पड़ता है।

उदयपुर के निकट पई उंदरी गांव के पास पाबा में गुरुदेव ध्यानमग्न थे। रात्रि को बारह बजे अचानक दिनेश मुनि ने देखा कि गुरुदेव जिस कक्ष में जापानुष्ठान कर रहे हैं वह पूरा ही प्रकाश से आच्छादित है। यह रोशनी अन्तर को आनंदित करने वाली थी जिसे पहले कभी नहीं देखी गई और गुरुदेव उस मधुरिम प्रकाश में ज्योतिर्विद बने अपने आसन से आध-पौन फीट ऊपर उठे हुए थे। दिनेश मुनि के लिए वह दृश्य चकित करने के साथ चौंकाने वाला भी था। यह सन् 1981 की घटना है।

ऐसा ही प्रकाशपुंज उदयपुर के तारक गुरु जैन ग्रंथालय में देखा जब गुरुदेव गहन रात्रि में जापानुष्ठान में थे। यहां के उस कक्ष में तो दिनेश मुनि ने बड़ी देर तक अदृश्य होती छम-छम की बड़ी मोहक ध्वनि भी सुनी तो वे अवाक् रह गये। वह दृश्य उस पूरी रात उनकी

आंखों में समाया रहा। सुबह होने पर वे उस रहस्य को जानने की उत्सुकता नहीं रोक पाये और गुरुदेव से पूछ बैठे। गुरुदेव ने मंद मुस्कान देते बताया कि कई बातें जानने की नहीं होतीं। तुम भी कुछ साधना करते रहो पर इससे दिनेश मुनि की जिज्ञासा शान्त नहीं हुई तब गुरुदेव बोले- 'कई देवता यदा-कदा आते हैं। उनकी भी समस्या होती है। वे भी समाधान चाहते हैं।'

आत्माएं नुगरी और सुगरी यानी बुरी और अच्छी दो तरह की होती हैं। नुगरी आत्माएं कई बार बड़ा अनिष्ट कर बैठती हैं। जिनको वे लग जाती हैं उनके शरीर में कंपकंपी देकर अपना वर्चस्व दिखाती हुई उस व्यक्ति को बेचैन किये रहती है। कई बार यह बेचैनी जीवन भर उस व्यक्ति में बनी रहती है और दम लेकर ही निजात पाती है। ऐसी स्थिति में घर के लोग भी बड़े परेशान और भयभीत रहते हैं।

ऐसी व्याधि शारीरिक नहीं होती। डाक्टरों द्वारा इलाज करने पर भी वह लाइलाज रहती है। सन् 1976 में चातुर्मास हेतु गुरुदेव रायचूर (कर्नाटक) में बिराज रहे थे तब दिनेश मुनि भी उनकी सेवा में थे। वहां पूना की श्रीमती वक्तीबाई अपने पति राजमलजी सुराणा के साथ गुरुदर्शन को आईं। वक्तीबाई को जिंद लगा हुआ था जो हर समय उन्हें परेशान किये रहता था। राजमलजी ने उनका हर संभव इलाज कराया मगर कोई परिणाम हाथ नहीं आया। उन्होंने गुरुदेव को इस सारी घटना और परेशानी से अवगत कराया। गुरुदेव से अपने श्रद्धावान भक्त की परेशानी देखी नहीं गई अत: उन्होंने पांच-सात दिन वहीं रहकर उनकी सेवा करने को कहा।

दिनेश मुनि ने बताया कि दूसरे ही दिन गुरुदेव ने उसका मुंह खुलवा दिया तब पहलीबार उसने वाणी खोलते हुए अपना नाम बताया तथा गत 25 वर्षों से वक्तीबाई को लगा हुआ है। गुरुदेव बोले-'वक्तीबाई पुण्यशाली बहन है। उसके सम्पर्क में जो भी आया, वह सुखी रहा। ऐसी धर्मवंत, दानशील तपधारिणी के साथ तुम्हारा जीवन भी धन्य हो गया।'

गुरुदेव की ऐसी मृदुल वाणी सुन वह उनका भक्त हो गया और मंगलिक सुनने की इच्छा जाहिर की। गुरुदेव बोले- 'तुममें भी जैनत्व के संस्कार अंकुरित हों और तुम्हारा कल्याण हो, ऐसी मेरी भावना है पर यह सब तब होगा जब तू वक्तीबाई को सदा-सदा के लिए अपने से मुक्त करेगा।' वह बोला- 'आप जैसी आज्ञा देंगे, मैं वैसा करूंगा पर मेरी भी एक कामना है कि आप प्रतिदिन मुझे मंगलिक सुनायेंगे। चाहे आप किसी परिस्थिति में हों।' गुरुदेव बोले-'अब तो तुम हमारे हो गए हो। तुम आओ तब मुझे संकेत कर देना। मैं तुम्हें मंगल पाठ सुना दूंगा।'

दिनेश मुनि ने गुरुदेव से जानना चाहा कि ऐसी आत्मा से उनकी बातचीत में कहीं भी कठोरपन नहीं झलका अपितु उसके प्रति इतनी सहानुभूति और आत्मीयता व्यक्त करने का क्या सबब रहा। गुरुदेव ने शान्त भाव से समझाया कि ऐसी निकृष्ट आत्माएं प्रेमभाव तथा स्नेह सौहार्द से ही वश में आती हैं। ऐसी परिस्थिति में बड़ी सब्र तथा धैर्य रखना पड़ता है। नुगरी आत्मा प्राय: जिस लिंग की होती है, वह उसी लिंगधारी को लगती है। विपरीत लिंगी को लगनेवाली बड़े कष्ट और दुख देती है।

दिनेश मुनि ने बताया कि वह आत्मा प्रतिदिन गुरुदेव से मंगलपाठ सुनने आती। गुरुदेव के पांव के अंगूठे में स्फुरण आ जाती। ऐसी स्थिति में अंगूठा निरन्तर हिलता रहता। इसी प्रकार 1996 में पूना निवासी कांतिलाल भटेवरा को लकवे ने आ घेरा जिससे उनकी हलनचलन बंद हो गई। चलना तो दूर उनका हिलनाडुलना भी संभव नहीं रहा। वे हॉस्पिटल में दाखिल कराये गये। डाक्टरों ने भी उनके जीने की आशा छोड़ दी। रात्रि को अचानक उन्हें गुरुदेव ने स्वप्न दिया। वे चंगे हो गये। सुबह उठकर बाहर घूमने लगे। उनको पूर्णत: स्वस्थ देख डाक्टर भी चकित हो गये। कांतिलाल पूना से सीधे उदयपुर गुरुदेव की समाधि पर आये और श्रद्धाभिभूत हुए।

महावीर जयन्ती के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

HIGH-END LUXURY APPARTMENTS

ARCHI
Platinum
Proud to be here...

SUKHADIA CIRCLE

ARCHI
PARADISE
Luxury Living

100 FT. ROAD, SOBHAGPURA

NEW VIDHYA NAGAR, SECTOR - 3

ARCHI
PEACE PARK
feel the peace

OPP. CA BHAWAN, SECTOR 14

ARCHI
SOLITAIRE
Apartment with luxury

ARCHI GROUP OF BUILDERS
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards DPS, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001
Ph.: +91-98290 22203, +91-97848 28555, Email: himanshu@archigroup.in • Web: archigroup.in

शब्द रंजन
उदयपुर, रविवार 01 अप्रेल 2018

सम्पादकीय

टिकाऊ नहीं, बिकाऊ होता शोधकार्य

इन दिनों विश्वविद्यालयों में शोधार्थियों और शोध विषयों की धूम अधिक देखी जा रही है। डिग्रियों का धड़ल्ले से खिड़कियों के बाहर निकलना ऐसा लग रहा है जैसे चरखी से गन्ना निकल रहा है। गन्ना दो प्रकार का होता है। एक वह जो रस से भरा-झरा होता है और दूसरा वह जो बांडा रसहीन होता है। इसमें रस कम राड़े यानी छोंतरे ज्यादा होते हैं। रस वाला गन्ना मीठा होता है। उसके रस से तृप्ति मिलती है और गुड़ बनता है।

शोध में भी ये दो धाराएं देखने को मिलती हैं। अब बिकाऊ शोध अधिक हावी है। उसी का बोलबाला है। यह झट मंगनी पट ब्याह कहावत को चरितार्थ करने वाली होती है। कौन विश्वविद्यालय प्रतिवर्ष कितनी डिग्रियां बांटता है, उसकी होड़ चलती है। जिसकी ऐसी होड़ चलती है उसका ग्राफ तो बढ़ेगा किन्तु मानक गिरता हुआ लगेगा। जब मानक अपकर्ष देगा तो समझ लो, शोध का क्षरण होने लग गया है।

पहले ऐसा नहीं था। ठोकपीट कर शोध की जाती। अक्षर-अक्षर बोलता। ऐंडाबेंडा विषय नहीं होता। शोधार्थी स्वयं लिखता। गुरुजी की पूरी देखभाल में शोध सिक्के की तरह खनखनाती और खड़ी की खान की तरह रंग रूप और असर बनाये रखती।

शोध के सिलसिले की बात चली तो मनासा निवासी लोकसंस्कृतिवेत्ता डॉ. पूरन सहगल ने बताया कि सन् 1971 में उन्होंने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से सन्त पीपाजी की कृतियों के संकलन और संपादन पर डाक्टरेट की उपाधि ली। निर्देशक डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय तथा परीक्षक हजारीप्रसाद द्विवेदी और परशुराम चतुर्वेदी जैसे लेखक-चिन्तक थे। भूमिका भाग में टंकण की कुछ अशुद्धियां रह गई थीं और जिस ग्रंथ से संस्कृत के उद्धरण लिये थे वे अशुद्ध थे सो द्विवेदीजी ने उन श्लोकों को शुद्ध कर रिपोर्ट दी और शुद्धि के बाद पुनः शोधप्रबंध प्रस्तुत करने का सुझाव दिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति शिवमंगलसिंह 'सुमन' ने रिपोर्ट पढ़ते ही शोधार्थी सहगल को बुलाया और कहा, घबराने की कोई बात नहीं है। द्विवेदीजी के सुझाव के अनुसार यह कार्य यहीं करवा लेता हूं ताकि तुम परेशानी से मुक्त हो सको। उन्होंने अपने कार्यालय में ही द्विवेदीजी के निर्देशानुसार आवश्यक सुधार करवा कर दूसरे ही दिन शोधप्रबंध सब्मीट करवाया और उसकी फीस भी अपनी ओर से जमा करवाकर द्विवेदीजी के निर्देश को पूरा करवाया।

सहगलजी ने बताया कि विश्वविद्यालयों में अब ऐसे महानुभाव नहीं हैं, यह तो मैं नहीं कहता पर मैं तो गौरवशाली हूं कि मुझे ऐसे-ऐसे दिग्गजों का सान्निध्य एवं आशिष मिला।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' अपने क्षेत्र में प्रकाशित होने वाले पत्रों में पहला, अनोखा और अन्यतम पत्र है जिसे केवल 'समाचार पत्र' कहने में संकोच होता है। इसमें मेवाड़ अंचल की मूलभूत पारम्परिक संस्कृति को समेटे साहित्यिक रचनाएं बहुतायत में मिलती हैं। प्रगतिशील दृष्टि और प्राचीन वैभव में सन्तुलन बनाये हुए लोक और शास्त्र में समन्वय के साथ कला और ललित कलाओं की व्यापक परिधि को संभालते हुए यह पत्र विकासोन्मुख है। इसके हर अंक से मैं बहुत प्रसन्न, सम्पन्न और तृप्त होता हूं।

-डॉ. सत्यनारायण व्यास

सामेला में सम्मानितों का मिलन

पिछले दिनों उदयपुर में हुए एक सामेला में बैंगलोर की वीरपात्राभिनय की बेजोड़ अभिनेत्री गीथा, तेजपुर-असम की ख्यातलब्ध कलानेत्री रंजू देवी, लोककलाविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत तथा लखनऊ के प्रख्यात नाट्यकार पुनीत अस्थाना।

शब्द-साधकों का सम्मान ही अकादमी की सार्थकता

शब्द साधकों का सम्मान कर कोई भी संस्था स्वयं ही सम्मानित होती है इसलिए प्रत्येक समाज को अपने संस्कृतिकर्मियों, कलाकारों एवं सर्जकों का यथोचित सम्मान करके अपनी सार्थकता सिद्ध करनी चाहिए। राजस्थान साहित्य अकादमी ने यह काम करके अपने कर्तव्य का पालन किया है। ये विचार प्रख्यात आलोचक डॉ. कृष्णकुमार शर्मा ने व्यक्त किये। वे बतौर विशिष्ट अतिथि राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित वार्षिक पुरसकार समारोह में बोल रहे थे।

मुख्य अतिथि साहित्य परिषद मध्यप्रदेश के निदेशक उमेशकुमार सिंह ने कहा कि साहित्यिक पुरस्कारों एवं सम्मानों को सांस्कृतिक, साहित्यिक प्रतिबद्धता के प्रतीक के तौर पर स्वीकार करना चाहिए। अकादमी अध्यक्ष इंदुशेखर तत्पुरुष ने प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण की ओर साहित्यिकों का ध्यान आकृष्ट करते हुए सृजन के प्रभाव को रेखांकित किया। अकादमी सचिव डॉ. विनीत गोधल ने आभार व्यक्त किया।

समारोह में पं. जनार्दनराय नागर सम्मान डॉ. मथुरेशनन्दन कुलश्रेष्ठ को, विशिष्ट साहित्यकार सम्मान डॉ. देव कोठारी, डॉ. भगवतीलाल व्यास, पं. नरेन्द्र मिश्र, राम जैसवाल तथा अमृत सम्मान दयानन्द भार्गव, लक्ष्मीनारायण चातक, भूपेंद्र तनिक, देवीप्रसाद गुप्त, माधव दरक, तनसुखराम शर्मा, नरपतसिंह सांखला, बजरंगलाल विकल, एवं श्रीमती संतोष सांघी को प्रदान किया गया।

इसी प्रकार दीप्ति कुलश्रेष्ठ को मीरा पुरस्कार, पद्मजा शर्मा को सुधीन्द्र पुरस्कार, रमेश खत्री को देवीलाल सामर पुरस्कार, लहरीराम मीणा को देवराज उपाध्याय पुरस्कार, हरदर्शन सहगल को कन्हैयालाल सहल पुरस्कार, गोविन्द भारद्वाज को शम्भुदयाल सक्सेना पुरस्कार एवं देशवर्धन सिंह को सुमनेश जोशी पुरस्कार दिया गया।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ संदेश लेकर स्केटर्स रवाना

उदयपुर। कश्मीर में भारतीय सेना के साथ हो रहे दुर्व्यवहार के विरोध में तथा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के संदेश को लेकर उदयपुर से तीन नन्हे मुन्हे स्केटर्स जगतप्रतापसिंह गहलोत, कृष्णकँवर गहलोत और जीया कँवर ने कोच मंजीत सिंह, सहकोच चिराग जैन तथा पुष्पेन्द्र सिंह के साथ स्केटिंग करते हुए 25 मार्च को उदयपुर से प्रस्थान किया। यात्रा को कर्नल महेश गांधी ने हरी झंडी दिखाई। स्केटर्स नाथद्वारा, राजसमंद, भीम, ब्यावर, किशनगढ़, बगरू, जयपुर, नोएडा होते हुए दिल्ली पहुंचेंगे। वहां राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से भेंट करेंगे।

डॉ. दिनेश खराड़ी सीएमएचओ बने

उदयपुर। उदयपुर जिले में कार्यरत ब्लॉक सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी प्रतापगढ़ सीएमएचओ बनाये गए। पदभार ग्रहण करते उन्होंने बताया कि वे मुख्यमंत्री की प्राथमिकता वाली योजनाओं के साथ राष्ट्रीय योजनाओं पर विशेष रूप से फोकस करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रतापगढ़ टीकाकरण के क्षेत्र में अव्वल है। इस औसत को वे कायम रखने के साथ ही शत-प्रतिशत बाल टीकाकरण पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। रोगियों के कल्याण के लिए चल रही सरकारी योजनाओं का विश्लेषण कर तदनुरूप करवाने का प्रयत्न करेंगे।

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

पार्श्वकल्ला
PARSHVAKALLA

PARSHVAKALLA PUBLIC RELATIONS
PARSHVAKALLA PAPERS
PARSHVAKALLA ADVERTISERS
मुक्तक प्रकाशन · सम्पति संस्थान
शब्द रंजन (विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक)

प्रतिष्ठान : 'पार्श्वकल्ला' 13 14, म्यूनिसिपल शॉप, चेतना होटल के पास, चेटक सर्कल, उदयपुर 313004 (राज.) फोन : + 91 294 2429291, मो. 94141-65391
निवास : 352, श्रीकृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर 313001, फोन : +91 294 2412174, मो. 8003377333, E-mail : drtuktakbhanawat@gmail.com

स्मृतियों के शिखर (49) : डॉ. महेन्द्र भानावत

साधना की आराधना के शिखर उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि

पुष्कर मुनि कई रहस्यों, चमत्कारों तथा सिद्धियों के स्वामी बने। वे प्रतिदिन 11 से 12 तथा रात्रि को 8 से 9 और फिर 2 से 5 बजे जाप करते। दिन को बारह बजे तथा रात्रि को नौ बजे वे जनता जनार्दन को मंगलिक सुनाते। प्रत्युत्पन्न मति-गति के धनी उपाध्यायश्री विद्वानों के साथ संवाद एवं बातचीत को गहराई से लेते। अगरचंद नाहटा, पं. बेचरदास तथा दलसुखभाई मालवणिया के साथ कई बार उनका गहन मंथन हुआ। उनमें दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद तथा रजनीश सा प्रज्ञा-बोध था। बड़ा रसीला उनका कंठ था और समय की धार के अनुरूप गीति-रचना द्वारा वे श्रोता समाज को रसमग्न कर देते।

सत के धारक संत सुधर्मी, तपस्वी एवं साधक होते हैं। अपनी साधना एवं तपस्या से वे आत्म ज्योति जाग्रत करते हैं। इस ज्योति से वे आत्म शक्ति को प्रबल कर अपने तन को उज्ज्वल तथा मन को पवित्र करते हुए उत्तम पुरुष किंवा महा मानव पद प्राप्त कर जन-जन के कंठहार बनते हैं। जिस संत की आत्मा जितनी शुद्ध तथा शक्ति सम्पन्न होगी वह उतना ही बड़ा संत, संत-शिरोमणि पद का धारक होता है।

ऐसे संत प्रत्येक जाति, वर्ग, धर्म तथा समुदाय में हुए हैं जिन्होंने अपने उपदेशों द्वारा सरल एवं सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा दी। कई संतों ने अपने प्रभाव से विशिष्ट पंथ, सम्प्रदाय तथा संघ-संगठन स्थापित किये। ऐसे संत भी हुए जो किसी वर्ग, सम्प्रदाय के होते हुए भी सबके, जन-जन के श्रद्धेय बने।

उपाध्याय पुष्कर मुनि ने मेवाड़ के सेमटाल गांव में ब्राह्मण परिवार में 17 अक्टूबर 1910 को जन्म लिया। सेमटाल उदयपुर-गोगुन्दा मार्ग स्थित गांव है जो कभी राणा प्रताप की आश्रय स्थली भी रहा। मुनि ज्येष्ठमल पहुंचे हुए साधक थे। उनका सान्निध्य प्राप्त कर पुष्कर मुनि भी साधनारत हुए और कई रहस्यों, चमत्कारों तथा सिद्धियों के स्वामी बने। वे प्रतिदिन 11 से 12 तथा रात्रि को 8 से 9 और फिर 2 से 5 बजे जाप करते। दिन को बारह बजे तथा रात्रि को नौ बजे वे जनता जनार्दन को मंगलिक सुनाते। इसमें वे प्रारम्भ में मंगलम् भगवान वीरो तथा सर्व मंगल मांगल्यम श्लोक सुनाते तदनन्तर नवकार महामंत्र का पाठ सुनाते और अंत में आनंद ही आनंद का उच्चारण कर आशीर्वचन कहते।

मंगलिक सुनने के लिए दूर-दूर से व्यक्ति आते। बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों की भीड़ लगी रहती। मुझे कई व्यक्ति ऐसे मिले जिनके लिए दवाई कारगर सिद्ध नहीं होकर महाराज की मंगलिक ने असर किया। साधना और सिद्धि की दूसरी बड़ी देन पुष्कर मुनि की लोगों को माला फेरने की ओर प्रवृत्त करना रही। संकटग्रस्त, समस्याग्रस्त जो भी व्यक्ति उनके पास आता, मुनिश्री माला फेरने की सलाह देते। वे सलाह ही नहीं देते, माला भी प्रदान करते। यह माला वैजयन्ती माला के नाम से जानी जाती। अकल बेल के मणियों की यह माला प्रति वर्ष उनका एक भक्त लाता। काले मणियों की ऐसी माला हजारों की संख्या में लोगों के पास पहुंची।

ऐसा भी हुआ जब माला पाने वालों की संख्या अधिक रही तब गुरुदेव ने अपने हाथों से ये मालाएं लुटाईं भी। मुनि पुष्कर द्वारा प्रदत्त माला जिसके पास रहती, उसे सर्पदंश का भय नहीं रहता। बीमारी के अनुसार वे माला फेरने का कल्प देते। किसी को केवल नवकार मंत्र की तो किसी को ज्येष्ठ गुरु की। किसी को दोनों की की माला फेरने को कहते। यही नहीं, माला फेरने की संख्या का भी निर्देश देते। यह निर्देश एक माला से लेकर सात, ग्यारह और इक्कीस माला तक का होता। इसी प्रकार कितने दिन तक माला फेरने का भी प्रावधान बताते।

मुनिश्री ने ज्येष्ठ गुरु की प्रार्थना भी बनाई जिसे संकटमोचन प्रार्थना के रूप में लोग लयबद्ध गाते। इसका प्रत्येक बोल मंत्रवत सिद्ध हो गया। आज भी अनेक भक्त इस प्रार्थना को अपनाये हुए स्वस्थ जीवन जी रहे हैं। धर्मस्थानों में इसका समूह-स्वर बड़ा आनंद और सुखवर्धक लगता है। गुरुदेव स्वभाव से बड़े मृदुल, हंसमुख तथा वाणी में यश कर्म का उदय था।

मुनिश्री के दर्शन करने वालों में कई तरह के लोग होते। जिज्ञासु भी आते तो तार्किक भी। विपरीत मति वाले भी आते तो बेढ़ंगे सवाल करने वाले भी। ऐसे भी आते जो जानते हुए भी अनजान बन उनकी परीक्षा लेते लेकिन इन सबका मुनिश्री को पूर्वाभास हो जाता और तदनुकूल ही वे उनके साथ आचरण करते। प्रत्युत्पन्न मति-गति के धनी उपाध्यायश्री विद्वानों के साथ संवाद एवं बातचीत को गहराई से लेते। अगरचंद नाहटा, पं. बेचरदास तथा दलसुखभाई मालवणिया के साथ कई बार उनका गहन मंथन हुआ।

शब्दानुसारिणी विद्या की सिद्धि से वे अपनी प्रभावी प्रस्तुति से असरवान बने रहते। उनमें दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद तथा रजनीश सा प्रज्ञा-बोध था। बड़ा रसीला उनका कंठ था और समय की धार के अनुरूप गीति-रचना द्वारा वे श्रोता समाज को रसमग्न कर देते।

देवेन्द्र मुनि और गणेश मुनि दोनों उपाध्यायश्री के पट्ट शिष्य रहे। देवेन्द्र मुनि ने तारक गुरु जैन ग्रंथालय को लेखन केन्द्र बनाया तो गणेश मुनि ने अमर जैन साहित्य संस्थान को पुष्ट सान्निध्य दिया।

देवेन्द्र मुनि के आचार्य पद के चादर महोत्सव को ऐतिहासिक उपलब्धि देने वाले पुष्कर मुनि बाद में अस्वस्थ हो गये। उन्होंने देवेन्द्र मुनि से कहा- ''मेरा अंतिम समय आ गया है, चौविहार संथारा करा दो।'' चैत्र शुक्ला एकादशी, 3 अप्रैल 1993 शनिवार को सांध्यकालीन प्रतिक्रमण पूरा हुआ कि उन्हें दीर्घ प्रश्वास ने आ घेरा और रात्रि नौ बजकर अठारह मिनिट पर उनकी श्वास गति सदा-सर्वदा के लिए अवरूद्ध हो गई। पुष्कर मुनि की ज्योतिष में भी अच्छी दखल थी।

उपाध्याय पुष्कर मुनि अपने संघ के महिमावान मुनि थे। कई भाषाओं के जानकार तथा अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण लोकजीवन में उन्होंने बड़ी पैठ जमाई और श्रद्धा, आस्था एवं विश्वास के संबल बने। आचार्य नहीं होते हुए भी उनका सम्प्रदाय उन्हीं के नाम से जाना गया। ठीक उसी प्रकार जैसे दिवाकर मुनि चौथमल भी आचार्य नहीं थे किन्तु उनके सर्वतोमुखी प्रभाव के कारण आज भी उनके नाम से उनके सम्प्रदाय की पहचान बनी हुई है।

अपनी आशु प्रज्ञा के कारण उन्होंने सामान्य जनता में बड़ी लोकप्रियता अर्जित की। उनके व्याख्यान से प्रत्येक जन रस ग्रहण करता और उनसे बंध जाता। वे जहां भी जिस गांव, शहर में प्रवेश करते, उसके वैशिष्ट्य को अपनी काव्य बंधी से बांध लेते और उसे रसीले अंदाज में गाकर मंत्रमुग्ध करते। चित्तौड़ में प्रवेश कर जो व्याख्यान उन्होंने दिया उसकी प्रशंसा में तत्काल छंद रचना कर वहां की जनता पर जादू ढा दिया। पंक्तियां थीं- 'गढ़ चित्तौड़ है /करे कौन होड़ है / सुनो जन सारा हो / अजब नजारा हो।'

राष्ट्रसंत प्रवर्तक गणेश मुनि शास्त्री 30 वर्ष तक गुरु पुष्कर के सान्निध्य में रहे। उन्हीं से दीक्षित हुए तथा साहित्य सृजन को प्रेरित हुए। गणेश मुनि के शिष्य जिनेन्द्र मुनि 'काव्य तीर्थ' उपप्रवर्तक पद को विभूषित किये गये। कविता की तुकबन्दी करना उन्होंने गुरुदेव पुष्कर मुनि से ही सीखा। उनके साथ रहकर उन्होंने कई छन्द लिखे। व्याख्यान में जब गुरुदेव उन्हें सस्वर सुनाते तो जिनेन्द्र मुनि साथ में टेक बनाये रखते। ऐसे करते-करते उन्हें भी काव्य-रचना की अच्छी पकड़ मिल गई। ऐसे प्रभावी संत बिरले बने रहकर युगयुगीन अपनी छाप दिये रहते हैं।

पोथीखाना

अजेय भारत-लोक भारत

लोक को परिभाषित कर पाना उसी प्रकार कठिन है जैसे ईश्वर की व्याख्या या समीक्षा करना। लोकत्व और ईश्वरत्व दोनों ही शब्दातीत भाव हैं। इनका विस्तार उतना ही है जितनी यह कायनात है। सागर की सीमा हो सकती है, लोक की नहीं।

श्री अजय मदन गरासिया की साहित्यिक रुचियों से तो मैं अवगत था किन्तु उनकी लेखन-प्रतिभा और शोध-दृष्टि से मेरा परिचय उनकी सद्य प्रकाशित कृति 'अजेय भारत लोक भारत' देखकर हुआ। लेखक ने इस शोधपरक कृति को चार खण्डों में विभाजित किया है। (1) अजय भारत लोक भारत (2) अजेय भारत के विखण्डित लोकांचल (3) प्रस्तावित भारतीय लोकांचल व भारतीय जातियों का बटांककन (4) भारत की वर्तमान आवश्यकता व विश्व निर्माण।

प्रथम खण्ड में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और वेद आधारित सन्दर्भों पर चर्चा करते हुए भारत की वैश्विक एवं विशाल सांस्कृतिक गौरव-गरिमा पर शोधपरक दृष्टि डालते हुए विस्तृत समीक्षात्मक अनुशीलन किया है। दूसरे खण्ड में भारत के उन लोकांचलों को पुनर्जीवित करने की सारगर्भित चर्चा करते हुए भारत को लोक आंचलिक नजरिए से देखने और संयोजित करने की संगोष्ठी आयोजित की है।

संभवत: वे चाहते हैं कि सुविज्ञजन उनके विचार पर सोचें और विचारों का आदान-प्रदान करें और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पूर्व लोकांचलों के मनोभावों को अवश्य परखें।

तीसरे अध्याय में लेखक ने एक ऐसी चर्चा छेड़ दी है जिस पर चर्चा होने, बहस होने, सहमति, असहमति होने और आलोचना-समालोचन होने की संभावनाओं से इन्कार नहीं किया जा सकता। लगता है जैसे यह खण्ड लिखने के लिए ही पूर्व के दो खण्ड सृजित किये गये हैं। चतुर्थ ख्ण्ड- भारत की वर्तमान आवश्यकता व विश्व निर्माण लेखक की सुविचारित एवं सुसांस्कृतिक अवधारणा है। सर्वेभवन्तु सुखिन: तथा ईशावाद्य मिदं सर्वं का भाव प्रथम खण्ड से ही प्रारम्भ होकर चतुर्थ खण्ड तक एक सलिला की भांति प्रवाहित होता रहा है।

लेखक ने वेदों से विनोबा तक देश-विदेश के जितने भी चिन्तक हुए हैं, उनका अध्ययन किया है। इसका प्रमाण हमें इन चारों खण्डों में सहज ही मिल जाता है। इस कृति में लेखक ने अनेक प्रश्नों को उछाला है। यथा उचित उनका समाधान करने का भी प्रयत्न किया है। लेखक ने भारतीय संस्कृति के चरण चिन्ह भारत के बाहर अन्य देशों में भी देखे-परखे हैं तथा उनके प्रमाण भी प्रस्तुत किये हैं।

सत्य की शोध-परम्परा कभी पूर्ण नहीं होती। वह निरन्तर बनी रहती है। सत्य का यह शोध प्रयास हम सबको नई दृष्टि, नई प्रेरणा और नई शोध अवधारणाओं से पूरित करेगा ऐसा मेरा विश्वास है। इस कृति को स्कूली शिक्षा के शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों को अवश्य पढ़ना चाहिये। यदि इसे पाठेयत्तर सन्दर्भ पाठ्यक्रम के रूप में स्वीकृत किया गया तो हमारी युवा पीढ़ी अपने गौरवशाली अतीत एवं सांस्कृतिक वैभव को जान-समझ सकेगी। -वंदना चौहान

बुन्देली बसन्त की बहादुरी

बुन्देली विकास संस्था, महल परिसर, छतरपुर से जुड़े डॉ. बहादुरसिंह परमार पिछले 19 वर्षों से वार्षिक पत्रिका बुन्देली बसन्त का प्रकाशन कर रहे हैं। इस पत्रिका की विशेषता यह है कि इसमें वे बुन्देली भाषा, साहित्य, संस्कृति, इतिहास आदि से सम्बन्धित रचनाओं को मुख्यता दिये रहते हैं।

एक सन्दर्भ में उनका पावन लक्ष्य बुन्देली अंचल को समग्रता के साथ प्रतिष्ठित करना है। यह उत्तम सोच है। हमारा मन अधिकांश में इस तरोताजगी में जीने को आतुर रहता है कि बाहर के लोगों के बीच हमारी प्रतिष्ठा बने इसलिए उन लोगों के साथ ही हम अपना तादात्म्य बनाने को अग्रगामी उत्सुकता लिए रहते हैं जबकि बार-बार कहावत दस्तक देती कहती है- दीया तले अंधेरा रखने वाला स्वयं ही अंधेरे में भटकन लिये रहता है और घर का पूत कुंवारा रह जा पाड़ांस्यां ने फेरा दे।

सो बुन्देली बसन्त ने हमें आगाह किया है। भारतेन्दु ने तो कहा ही था- 'निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल।' डॉ. बहादुरसिंह परमार ने बुन्देली बसन्त के माध्यम से बुन्देलखण्ड के सांस्कृतिक इतिहास और उसकी जीवनधर्मिता को उन सभी कोणों से देखा-परखा है जो इस अंचल, यहां की प्रकृति, यहां के पुरुष और उसकी निरन्तरता की जीवन्तता को उत्कर्ष दे भारतीयता की समग्रता को समृद्ध करने का कौशल लिये हैं। यह भगीरथ कार्य है जिससे अन्य अंचलों में कार्य कर रहे अध्येताओं को सीख मिलती है।

- म. भा

उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि की त्रि-दिवसीय जैजैकार

साधना के शिखर पुरुष थे उपाध्याय पुष्कर मुनि : आचार्य शिवमुनि

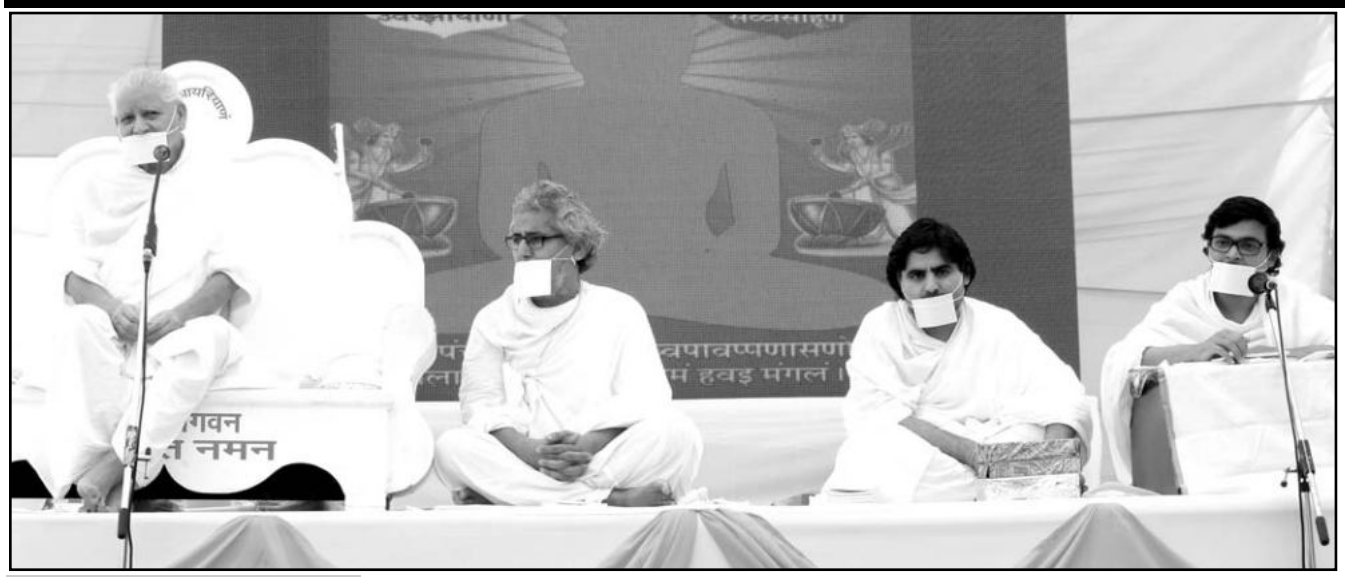

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। विश्वसंत उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि साधना के शिखर पुरुष थे। उन्होंने संयम साधना, सतत ज्ञान साधना, आत्मकल्याण व प्राणी मात्र के कल्याण के जो गूढ़ मंत्र दिए उनसे सीख लेकर हम जीवन को धन्य बना सकते हैं। जिनशासन के आलोकित संसार में कोई छोटा-बड़ा नहीं, कोई अपना-पराया नहीं, कोई ऊंचा-नीचा नहीं, सबको एक समान समझने का जो भाव उपाध्यायश्री ने दिया हमें निरंतर साधना से उसे अपने व अपनों के जीवन में साकार करना है। ये विचार श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान आचार्य सम्राट शिव मुनि ने रविवार को प्रथम दिवस 25 मार्च को तारक गुरु जैन ग्रंथालय एवं जैनाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि शिक्षण व चिकित्सा शोध संस्थान ट्रस्ट की ओर से विश्वसंत उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि महाराज के 25वें रजत पुण्य स्मरण दिवस में व्यक्त किये।

आचार्यश्री ने कहा कि पहली बार जैन समाज की ओर से ऐसा समारोह आयोजित किया गया है जिसमें न तो कोई अतिथि था, न अध्यक्ष। ना ही इसमें किसी किसी राजनेता, दानवीर, समाजसेवी का स्वागत सत्कार ही किया गया है। समारोह में मौजूद हजारों धर्मानुरागियों से कहा कि अपने बच्चों को संस्कारवान बनाना है तो उन्हें साधु-संतों के पास अवश्य लेकर जाइये। उनमें स्वाध्याय का भाव जगाइये तभी संयम व ज्ञान साधना का मार्ग प्रशस्त होगा।

श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि ने कहा कि उपाध्याय सदैव नवकार मंत्र को महत्व देते थे। समय की कद्र करते थे। बड़े से बड़ा राष्ट्रपति व मुख्यमंत्री भी आ जाए तो भी वे उन्हें छोड़ साधना में लीन हो जाते थे। उनके शाकाहार, व्यसन मुक्ति आदि के संदेश आज भी सार्थक हैं। देश की आजादी में भी उनका योगदान रहा।

महाश्रमण जिनेन्द्र मुनि ने कहा कि सत्य महावीर जैसा है। सत्य को बताया नहीं जा सकता है। उसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। उपाध्यायश्री दीक्षा ग्रहण करने के बाद जैन साधना पद्धति पर बढ़ते गये। गीता एवं उपनिषद् के घोषों के बीच आगम की गाथाओं एवं नमोक्कार महामंत्र का निनाद उनके व्यक्तिव का आवश्यक सोपान बन गया।

उपप्रवर्तक अक्षय ऋषि ने उन्हें संस्कृत, वैदिक, बौद्ध, न्याय आदि दर्शनों का प्रकाण्ड विद्वान कहा। शिरीष मुनि ने भगवान महावीर के संदेशों के उत्तरोत्तर प्रसार का संदेशक बताया। डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि ने कहा कि जैन कथा के 111 भागों, 300 विषय, 1000 से अधिक कहानियों का लेखन कर अपना नाम अमर कर दिया। उनके उपदेश प्रेम, अहिंसा, सहिष्णुता पर आधारित होते थे। डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि ने उपाध्यायश्री की संत साध्वी परम्परा को संयम पुरुषार्थ की परम्परा बताते कहा कि बेदाग जीवन, उच्च विचार, संगठन और संवाद से जुड़कर धर्म जागरण करना, इस परम्परा का मौलिक गुण है।

साधवी डॉ. दिव्यप्रभा ने पुष्कर मुनि को नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के साथ अध्यात्म के माध्यम से मानव कल्याण की बात कही। साध्वी प्रियदर्शना तथा साध्वी डॉ. रुचिका ने पुष्कर मुनि को श्रमण संस्कृति का अनूठा सेतु बताया।

समारोह में तारक गुरु जैन ग्रंथालय के महामंत्री वीरेन्द्र डांगी, उपाध्यक्ष गणेशलाल गोखरू, कोषाध्यक्ष विजयसिंह छाजेड़, मानसिंह रांका ने भी विचार रखे। इस दौरान 'जैन कर्म सिद्धांत में आचार्य देवेंद्र मुनि का अवदान', 'अनुभूति के आलोक में','पुष्कर सूक्ति कोष', 'स्वर्ण किरण', 'कुछ हीरे, कुछ मोती', 'बिन्दू में सिंधु', 'स्वर्ण किरण', 'विचार और अनुभूतियां' तथा 'जैन कथाएं भाग-61, 62, 70 तथा 77 का लोकार्पण किया गया।

कार्यक्रम में विजयसिंह छाजेड़, मानिसिंह रांका, राजेंद्र खोखावत, प्रकाश सिंयाल, प्रमोद खाब्या, प्रकाश झगड़ावत, कालूलाल सिंघवी, दिनेश चोरडिया, निर्मल हड़पावत, विजयसिंह सेठ, महेंद्र लोढ़ा, अशोक मोदी, चेतन छाजेड़, मुकेश छाजेड़, विक्की छाजेड़, दीपक मोदी, संदीप बोल्या, राजू बाफना, लहरसिंह छाजेड़, मांगीलाल जैन, डॉ. जी. एल. चपलोत, चांदमल जैन, एडवोकेट रोशनलाल जैन, कमल भंडारी, हंसराज चौधरी, मुकेश चौधरी, गणेशलाल गोखरू आदि का सहयोग रहा।

आत्मीक उन्नयन के लिए आयम्बिल प्रथम सीढ़ी

द्वितीय दिवस 26 मार्च आयम्बिल व्रत आराधना में श्रमणसंघीय सलाहकार दिनेश मुनि ने बताया कि उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि वचनसिद्ध तपपुरुष थे। उनके सान्निध्य में जो भी आता उसे वे तपश्चर्या की करने की प्रेरणा देते।

आयंबिल व्रत में एक आसन पर बैठकर बिना तेल-मिर्च-मसाले-मिष्ठान रहित भोजन करना होता है। पूरे दिन में एक बार भोजन लिया जाता है और इस व्रत को करने वाले श्रावक-श्राविकाएं रात्रि सूर्यास्त होने के बाद पानी भी सेवन नहीं करते हैं। इस व्रत में 350 श्रावक-श्राविकाओं ने तपाराधना पूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर महाश्रमण जिनेन्द्र मुनि, उपप्रवर्तक अक्षय ऋषि, डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि, डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि, सेवाभावी प्रवीण मुनि, जयंत मुनि, शमित मुनि, साध्वी दिव्यप्रभा, कल्पना, हेमवती का महत्वपूर्ण सान्निध्य रहा। कार्यक्रम में लक्की ड्रॉ भी निकाले गए।

महामंत्रों में नवकार सर्वोच्च फलदायक मंत्र

यों तो हर जाति, धर्म, सम्प्रदाय का अपना मंत्र होता है जिसमें किसी विशिष्ट दिव्यात्मा, देवी-देवता एवं विभूति की अभ्यर्थना होती है, किन्तु नवकार महामंत्र लोक के सर्व पापों को नष्ट करने वाला कहा गया है इसलिए यह मंत्र सर्वकालिक, सर्वधर्म समन्वयक एवं सर्व लोकमान्य बना हुआ है। ये विचार सलाहकार दिनेश मुनि ने तृतीय दिवस 27 मार्च को

आयोजित सामूहिक नवकार महामंत्र जाप के अवसर पर व्यक्त किये। इस जाप में 1000 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने सामूहिक सस्वर मंगल ध्वनि का उद्घोष किया। जाप के दौरान श्राविकाओं ने लाल चून्दड़ तथा श्रावकों ने श्वेत परिधान में आराधना भाव अर्पित किये।

महाश्रमण जिनेन्द्र मुनि तथा उपप्रवर्तक अक्षय ऋषि ने कहा कि उपाध्याय पुष्कर मुनि ने अपने उपदेशों द्वारा ग्रामीणजनों को सर्वाधिक प्रभावित किया और अनेकों को व्यसन मुक्त रहने का संकल्प दिलाया। समारोह को डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि, डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि, सेवाभावी प्रवीण मुनि, जयंत मुनि, शमित मुनि ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर 'गुरु पुष्कर पावन धाम' को श्रद्धालुओं ने 'नील गगन का एक सितारा-गुरु पुष्कर को नमन हमारा' जयकारे से गूंजायमान कर दिया। श्री पुष्कर मुनि के समाधिस्थल श्री पुष्कर गुरु पावन धाम का नवीनीकरण गिरधारीलालजी, मेथीबाई, बड़े भ्राता दीपचंदजी, भाभीश्री फेन्सीदेवी एवं भतीजा प्रदीप (रॉकी) की पुण्य स्मृति में सुमेरमल, मदनलाल, मोतीलाल, वीरचंद, महावीर, मनीष, आकाश नीमेश, ऋषभ, नीव, निलय, ढेलरिया मेहता (कुशीपवाला) गढ़सिवाना, सूरत अहमदाबाद द्वारा सम्पन्न हुआ। पुष्पेन्द्र मुनि ने बताया कि जाप पूर्णाहति के पश्चात 21 रजत सिक्के लक्की ड्रा में निकाले गए।

नामी डाक्टरों के परामर्श से खिले चेहरे

इससे पूर्व 17-18 मार्च को देवेन्द्र धाम में निशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया। यह शिविर जैनाचार्य श्री देवेन्द्र मुनि शिक्षण एवं चिकित्सा शोध संस्थान ट्रस्ट एवं सूरजदेवी भंवरलाल गोखरू चेरिटेबल ट्रस्ट के साझे में था जिसमें कार्डियक सर्जन डॉ. अनिल जैन ने नौ विशेषज्ञों की टीम के साथ हृदय के वाल्व, बायपास सर्जरी पर परामर्श दिया तो डेंटिस्ट एम्बुलेंस में डॉ. मनीष शाह व चार विशेषज्ञों ने दांतों सबंधी सभी बीमारियों का उपचार किया। स्पाइन फेलो डॉ. सुबिर जवेरी ने रीढ़ की हड्डी, कमर एवं गर्दन दर्द के मरीजों, डॉ. अजय जैन ने फेंफड़ों से संबंधित रोग, अस्थमा एवं

टीबी, डॉ. डिम्पल पारेख ने घुटने एवं कूल्हे की जांच के लिए रोबोट द्वारा घुटना प्रत्यारोपण, एंडोक्रायनोलॉजिस्ट डॉ. हिरेन पट ने डायबिटीज पर परामर्श दिया। डायबिटीज व बीपी के 1300 से अधिक मरीजों की जांच की गई। विशेषज्ञ चिकित्सकों ने करीब 800 लोगों को परामर्श दिया।

दूसरे दिन 1800 से अधिक मरीजों का उपचार किया गया। रोगियों को एक माह की दवाई निशुल्क वितरित की गई। शिविर के दौरान दिव्यांगों को ट्राई साइकिल, व्हील चेयर, कृत्रिम पांव (जयपुर फुट), श्रवण यंत्र एवं बैसाखी भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति उदयपुर के सहयोग से निशुल्क प्रदान की गई। विशेषज्ञ चिकित्सकों ने कहा कि वे मेवाड़ की धरा पर आकर धन्य महसूस कर रहे हैं। यहां के लोगों की मिलनसारिता और सेवाभाव अद्भुत है। नरेन्द्र गोखरु व अंजलि गोखरु ने आभार जताया। संचालन आलोक पगारिया ने किया।

'पैनिक बटन' बचाएगा अपनी और अपनों की जान

उदयपुर। कई बार एक्सीडेंट्स, आपातकालीन स्थिति और मेडिकल इमरजेंसी में यह नहीं सूझता है कि तत्काल किससे संपर्क कर मदद ली जाए। ऐसे में बेशकीमती वक्त जाया हो जाता है और जान पर बन आती है। मगर अब ऐसा नहीं होगा, राजस्थान के मनीष मेहता ने एक ऐसे एप का निर्माण किया है जिसमें आपात स्थितियों में सिर्फ एक पैनिक बटन दबा कर परिजनों, दोस्तों और डॉक्टरों से मदद ली जा सकती है।

'मेरापेशेंट एप' के फाउंडर मनीष मेहता ने बताया कि परिवहन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार देश में 1.5 लाख मौतें सिर्फ सड़क हादसों के कारण होती हैं। ऐसे में अगर तुरंत मदद मिल जाए तो जान बचाई जा सकती है। अब उनका लक्ष्य राजस्थान के 1 लाख युवाओं की स्वास्थ्य संबंधी जांच करना व युवाओं में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता पैदा करना है।

यह एप केमिस्ट्स और डायग्नॉस्टिक्स केंद्र के लिए एक एग्रीगेटर प्लेटफॉर्म भी मुहैया करवाता है। यहां पर आप अपनी दवा का पर्चा अपलोड कर सकते हैं और दवाइयों और सभी प्रकार की जांचों के लिए सर्वोत्तम मूल्य पर सेवा भी प्राप्त कर सकते हैं। इसी एप पर पेनिक बटन सुविधा है जिसे दबाते ही इमरजेंसी मदद मिल जाती है। मनीष ने बताया कि वे हमेशा ऐसे लोगों की मदद करना चाहते हैं जिन्हें आपातकाल में तत्काल किसी मदद की जरूरत होती है।

राजस्थान के पहले पीपीपी मोड एआरटी सेंटर का शुभारंभ

उदयपुर। उमरड़ा स्थित पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) में नेशनल एड्स कंट्रोल सोसाइटी भारत सरकार के पीपीपी मोड पर राजस्थान के पहले एआरटी सेंटर का उद्घाटन पीआईएमएस के चेयरमैन आशीष अग्रवाल, शीतल अग्रवाल, डीडीजी नाको डॉ. आरएस गुप्ता, प्रोजेक्ट डायरेक्टर (एड्स) राजस्थान स्टेट एड्स कंट्रोल सोसायटी (आरसेक) डॉ. एस. एस चौहान, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव टांक, डिप्टी सीएमएचओ डॉ. राघवेंद्र राय, आरसेक असिस्टेंट प्रोजेक्ट डायरेक्टर आरके सोनी ने किया। इस अवसर पर आईसीटीसी सेंटर और सुरक्षा क्लीनिक का भी अतिथियों ने फीता काट कर शुभारंभ किया।

समारोह में चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने कहा कि पीपीपी मोड पर राजस्थान का यह पहला एंटी रिट्रोवायरल सेंटर एड्स उपचार की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। एआरटी सेन्टर का मुख्य उद्देश्य उदयपुर संभाग जैसे एड्स संवेदनशील क्षेत्र में पीड़ितों को निशुल्क उपचार, परामर्श, काउंसलिंग प्रदान करने के साथ ही जागरूकता लाना है। यहां सभी सुविधाएं नि:शुल्क मिलेंगी।

श्री अग्रवाल ने बताया कि नेशनल एड्स कंट्रोल ऑर्गेनाइजेशन (नाको) ने देशभर में एड्स के बेहतर उपचार व जागरूकता के लिए 95-95-95 इनिशिएटिव हाथ में लिया है। इसमें सभी एड्स मरीजों को एआरटी सेंटरों से जोड़ कर सटीक काउंसलिंग दिलाना, नियमित उपचार को प्रेरित कर उनकी जीवन प्रत्याशा को बढ़ाना, वायरल लोड को कम करना आदि उद्देश्यों को 2022 तक हासिल करना शामिल है। इसी इनिशिएटिव के तहत एआटी सेंटर्स को पीपीपी मोड पर दिया जा रहा है। इस केंद्र की सभी सुविधाएं पीआईएमएस द्वारा निशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी।

मुख्य अतिथि डॉ. आरएस गुप्ता ने कहा कि भारत में कुल 500 एआरटी सेंटर है जिनमें से निजी क्षेत्र में यह 23वां व राजस्थान का पहला एआरटी सेंटर है। उन्होंने कहा कि एड्स के उपचार में हमेशा राइट थिंक, राइट टाइम, राइट प्लेस की जरूरत होती है और पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज इस पर खरा उतरता है।

सीएमएचओ डॉ. संजीव टांक ने बताया कि उदयपुर में 4500 एड्स रोगियों को चिन्हित किया गया है जिनमें से 3000 का आरएनटी मेडिकल कॉलेज एआरटी सेंटर पर उपचार किया जा रहा है। इस वर्ष 850 नए मरीजों को चिन्हित किया गया है जिनकी काउंसलिंग हो गई है। उम्मीद है कि पेसिफिक एआरटी केंद्र पर और अधिक मरीजों की स्क्रीनिंग व काउंसलिंग हो सकेगी। डॉ. एसएस चौहान ने कहा कि पीआईएमएस में पीपीपी मोड पर पहला एआरटी सेंटर खुलने से अब एड्स के मरीजों तक हमारी पहुंच आसान हो जाएगी। प्रिंसिपल डॉ. चंद्रा माथुर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। एसोसिएट प्रोफेसर महिला एवं प्रसूति विभाग डॉ. प्रदीप भटनागर ने बताया कि एड्स पीड़ित प्रसूताओं को एआरटी सेंटर पर विशेष चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाएगी।

'टाटा स्काई वर्ल्ड स्क्रीन'

उदयपुर। टाटा स्काई ने 'टाटा स्काई वर्ल्ड स्क्रीन' नामक नई पेशकश की है। यह पेशकश इंटरनेशनल कंटेंट का एक गुलदस्ता है, जिसे बड़ी सावधानी और प्यार से तैयार किया गया है।

टाटा स्काई के चीफ कंटेंट ऑफिसर अरुण उन्नी ने कहा कि टाटा स्काई वर्ल्ड स्क्रीन की लॉन्चिंग के साथ हम सिनेमा और टेलीविजन के शौकीनों के लिए न केवल हॉलीवुड बल्कि दुनिया भर से ग्रेट स्टोरीज के विज्ञापन-मुक्त 650 घंटों की पेशकश कर रहे हैं। हमारा विश्लेषण बताता है कि टेलीविजन के कंटेंट की पसंद में भारी बदलाव आ रहा है। दर्शक रोमांचक और विविध सामग्री की खोज कर रहे हैं, जिसका भाषा से कोई लेनदेन नहीं है। हमारी ओर से चुनी गई सूची में दुनिया में सबसे लोकप्रिय और समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्में और टीवी शो शामिल हैं, इनमें से कई को भारत में पहले कभी टीवी पर नहीं देखा गया। टाटा स्काई की एक और अग्रणी पहल के रूप में यह पहली बार होगा कि डीटीएच प्लेटफॉर्म एक विज्ञापन-मुक्त सेवा प्रदान करेगा जहां उपभोक्ता दुनिया भर की चुनिंदा सीरीज और फिल्में देख सकते हैं।

हर दूसरा बच्चा 'चाइल्ड एब्यूज' का शिकार

उदयपुर। हम जिस समाज में रहते हैं उसमें अच्छाइयों के साथ बुराइयों का भी समावेश है। बच्चों को चाहिए कि कभी कोई बात अपने माता-पिता से नहीं छुपायें। बिना किसी भय और हिचक के अपनी बात कहें। दूसरी तरफ पेरेंट्स भी अपनी तमाम व्यस्तताओं के बीच दो पल सुकून के निकाल कर बच्चों से उनके मन की बात ज़रूर सुनें। उनकी दैनंदिन गतिविधियों सहित आवेगों पर भी लगातार नज़र रखें। ये विचार मानस एकेडमी में बच्चों को सोशल एब्यूज से बचाने तथा उनके अभिभावकों को इस दिशा में जागरूक करने के उद्देश्य से आयोजित इफेक्टिव पेरेंटिंग टिप्स जागरूकता सेमीनार में एम आर भारतीय एजुकेशन के निदेशक मनोज राजपुरोहित ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि समाज में शिक्षा से ही आमूलचूल बदलाव सम्भव है। पेरेंट्स बच्चों को पपेट की तरह नहीं बनाएं। उनमें अपना अच्छा-बुरा खुद सीखने समझने और सही निर्णय करने की शक्ति का सूत्रपात करें। भारत का लगभग हर दूसरा बच्चा चाइल्ड अब्यूज का शिकार है।

सेमीनार में बच्चों व अभिभावकों को इंटरेक्टिव तकनीकों के माध्यम से यह बताया गया कि किस प्रकार वे छेड़छाड़, अच्छे व बुरे स्पर्श का अंतर, बातों में छिपे मन्तव्यों सहित अन्य बुराइयों की समय रहते सही पहचान करें ताकि स्वस्थ एवं भयमुक्त वातावरण का निर्माण किया जा सके।

मानस एकेडेमी के निदेशक अनुराग मेहता ने बताया कि समाज व परिवार में चाइल्ड एब्यूज की चर्चा सकारात्मक तरीके के कर प्रतिरक्षात्मक उपाय व सावधानियां बरत इनसे बचा जा सकता है। साइकोलोजिस्ट कविता जैन ने प्रिक्टोरियल रिफरेन्स तथा खेल-खेल में सीख की विधि से बच्चों और अभिभावकों को जागरूक किया।

ऑडिट सिस्टम बेहतर बना रहा है आईडीबीआई

उदयपुर। आईडीबीआई बैंक ने गुणवत्तापूर्वक लेखा परीक्षण (क्यूएए) शुरूआत की है, ताकि भविष्य में इसकी आंतरिक लेखा परीक्षण कार्यप्रणाली श्रेष्ठ प्रथाओं की सुविधा के साथ सुदृढ़ एवं विस्तृत हो सके। इस उद्देश्य के लिए बैंक ने बाहरी विशेषज्ञ की नियुक्ति की है, जो कि सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसबी'ज) के अंकेक्षण सुधारों से जुड़ा रहा है।

इस क्यूएए के दायरे में बैंक तथा इससे जुड़े रिस्क आधारित पर्यवेक्षण के आंतरिक अंकेक्षण ढांचे की समीक्षा करना (नीतियां, प्रक्रिया, प्रणाली, रिपोर्टिंग संरचनाएं, स्वरूप, यह सुनिश्चित करने के लिए कि जो शाखा जोखिम मूल्यांकन फ्रेमवर्क व्यापार के कामकाज, निर्धारित प्रक्रियाओं, विनियामक अनुपालन आदि के अनुपालन में विभिन्न व्यावसायिक जोखिम मूल्यांकन मापदंडों, गंभीरता, जोखिम भार और लेखापरीक्षा टिप्पणियों से शाखाओं की जोखिम की गंभीरता को दर्शाता है इत्यादि की समीक्षा करें, बेंचमार्क के लिए, आंतरिक लेखा परीक्षा की अच्छी/सफल प्रथाओं की पहचान और अनुशंसा करने, विशेषकर बाजार में प्रचलित प्रथाओं, आंतरिक लेखा परीक्षण के पेशेवर अभ्यास मानकों के अनुपालन का आकलन करना शामिल हैं।

शिविर में 73 यूनिट रक्तदान

उदयपुर। हनुमान जयंती कार्यक्रम के तहत बजरंग सेवा मेवाड़ जगत द्वारा पेसिफिक मेडिकल हॉस्पिटल जगत में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें 73 यूनिट रक्त एकत्र हुआ। मुख्य अतिथि बजरंग सेना के प्रमुख कमलेन्द्रसिंह पंवार, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. हर्षदीपसिंह जाड़ेजा, जिला प्रभारी सुनील कालरा, देहात जिला मंत्री पुष्कर सोनी, जिला उपाध्यक्ष कमल असवानी एवं जिला महामंत्री रमेश वसीटा थे।

मगनसिंह सिसोदिया, विजयपालसिंह चौहान, राणा दरजान सिंह ने बताया कि बजरंग सेना मेवाड़ के इस 25वें रक्तदान शिविर में गजेन्द्र सिंह, मोड़ीलाल, केसरसिंह, डुलेसिंह, दौलतराम काटारा, भेरू सिंह, जवानसिंह चौहान, नंदू लोहार, पिंटू सोनी, पिंटू जैन, नंदू सोनी, भारत सिंह, मोहन सिंह, सुरेंद्र सिंह, देवीलाल पटेल, दीपक भावसार, शोभराज पंचाल, लोकेन्द्र सिंह, रूपसिंह, बहादुर सिंह, विक्रम सिंह, कारण सिंह, सूर्यवीर सिंह सहित बस्सी, लोदा, खेड़ी, वसु, रुनिजा गांव तथा उदयपुर के बजरंग सेना के कार्यकर्ताओं द्वारा रक्तदान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में धर्मेन्द्र टांक, लोकेन्द्रसिंह चौहान, रामसिंह सिसोदिया, नवलसिंह, शम्भू सिंह, सुरेन्द सिंह, प्रदीप सिंह का विशेष सहयोग रहा। कुंवर जे एस सल्लाड़ा ने अतिथियों का स्वागत एवं रक्तदाताओं का सम्मान किया।

बैंक ऑडिट पर सेमिनार में गबन ऋणों पर चर्चा

उदयपुर। विदेशी विनिमय व्यापार के दौरान गबन ऋणों का एनपीए में गलत वर्गीकरण होने से बैंक में कई वित्तीय परेशानियां खड़ी हो जाती हैं। गबन को पकड़ने एवं रोकने के लिए सीए को बैंकों की ऑडिट करते समय ऋण प्रदान करने के लिए तैयार की गई सभी फाइलों को आरबीआई के वर्तमान सर्कुलर के आधार पर बारीकी से अवश्य जांच लेना चाहिए। ये विचार सीए अजय कुमार जैन ने द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउन्टेन्टस ऑफ इंडिया द्वारा बैंक ऑडिट विषय पर आयोजित सेमिनार के प्रथम सत्र में व्यक्त किए। इसमें देशभर से 200 से अधिक सीए ने भाग लिया।

शाखा अध्यक्ष सीए पंकज जैन ने बताया कि सेमिनार के शुभारंभ अवसर पर सीए प्रकाश शर्मा (सेंट्रल कॉन्सिल मेम्बर, आईसीएआई), मुख्य अतिथि एस. विजयकुमार उप महाप्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, संजय क्रीका, डीसीबी बैंक लि., प्रमुख वक्ता अजयकुमार जैन एवं मुकेश चौधरी उपस्थित थे।

दूसरे सत्र में वक्ता मुकेश चौधरी ने सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर अंकेक्षण के दौरान बैंकों मे होने वाले गबन को पकड़ने के तरीके बताए। ई-मेल, पासवर्ड आदि का बैंकों की वैबसाईट, ई-भुगतान के होने वाले गबन को रोकने एवं पकड़ने के लिये सीए को अंकेक्षण के दौरान विशेष सावधानी बरतते हुए प्रौद्योगिकी टूल्स के इस्तेमाल पर भी विस्तार से बताया। शाखा के सीकासा अध्यक्ष सीए. दिलीप कोठारी ने आभार व्यक्त जबकि कार्यकारिणी सदस्य शैलेष माहेश्वरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। सेमिनार का संचालन शाखा उपाध्यक्ष सीए मनीष नलवाया ने किया।

कुलगौरवी को भामाशाह सम्मान

पिछले दिनों महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर के सिटी पैलेस में हुए समारोह में श्रीजी अरविन्दसिंह मेवाड़ से भामाशाह पुरस्कार से सम्मानित होती कुलगौरवी (पूजा)। कुलगौरवी भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. महेन्द्रसिंह राणावत की पुत्री है।

प्रधानमंत्री से मिल गद्गद् हुई बेटियां

उदयपुर। नई दिल्ली में उदयपुर की 63 प्रतिभाशाली बालिकाओं ने सांसद अर्जुनलाल मीणा के सान्निध्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भेंट की। प्रधानमंत्री ने इन छात्राओं को अपने लक्ष्य में आगे बढ़ने का आशीर्वाद देकर फोटो खींचवाया। उनके साथ राजस्थान सिंधी अकादमी के अध्यक्ष हरीश राजानी, पूर्व पार्षद भेरूलाल मीणा व चांदनी गौड़, संसद भवन के सुरक्षा अधिकारी किशनलाल जाट, सांसद मीणा के निजी सचिव भूपेंद्र वीरवाल, प्रधानाचार्य उर्मिला त्रिवेदी, गौरी जामरानी, सीमा ठाकुर आदि मौजूद थे।

शेयरधारकों को 3,051 करोड़ का लाभांश

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िंक के निदेशक मण्डल ने कंपनी के शेयरधारकों को चालू वित्त वर्ष में 300 प्रतिशत द्वितीय अंतरिम लाभांश की घोषणा की है जो दो रूपये के प्रति इक्विटी शेयर पर 6 रुपये है जो कुल 3,051 करोड़ रुपये है। गत मार्च, 2017 में हिन्दुस्तान जिंक ने 13,985 करोड़ रु. के विशेष लाभांश की घोषणा की थी। हिन्दुस्तान जिंक द्वारा अप्रेल 2016 में स्वर्ण जयन्ती लाभांश एवं अक्टूबर 2016 में अंतरिम लाभांश के साथ वर्ष 2016-17 में कुल लाभांश 27,157 करोड था जो भारत में किसी भी निजी कंपनी द्वारा किये जाने वाले लाभांश भुगतान में सबसे अधिक है।

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

एवरेस्ट ग्रुप ऑफ कम्पनीज़
❖ शुभलक्ष्मी बिल्डकॉन प्रा. लि.
❖ सावा सर्जिकल प्रा. लि.
❖ एवरेस्ट नेचुरल हर्बल प्रा. लि.
❖ एवरेस्ट इंटरनेशनल होटल एंड रेस्टोरेंट
❖ एवरेस्ट आशियाना बिजनेस प्रा. लि.
169- ओ रोड़, भूपालपुरा, उदयपुर (राज.) मो. 9414169241

डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि लिखित शोध कृति भेंट

तारक गुरु जैन ग्रंथालय, उदयपुर में डॉ. महेन्द्र भानावत को अपनी सद्य प्रकाशित शोध कृति 'जैन कर्म सिद्धांत में आचार्य देवेन्द्र मुनि का अवदान' भेंट करते श्रमण संघीय सलाहकार दिनेश मुनि, डॉ. द्वीपेन्द्र मुनि (बीच में) तथा डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि।

फील्ड क्लब चुनाव में आंचलिया सचिव, मनवानी उपाध्यक्ष

दायें से सचिव यशवंत आंचलिया एवं उपाध्यक्ष उमेश मनवानी। इनसेट में कोषाध्यक्ष कर्तव्य शुक्ला।

हाल ही में वर्ष 2018-20 के लिए हुए फील्ड क्लब के चुनाव में वाइस प्रेसिडेंट पर उमेश मनवानी ने 914 प्राप्त कर जसनीतसिंह पाहवा (सोनू) को 142 मातो से हराया। सेंक्रेटरी पद पर यशवंत आंचलिया ने 1022 मत प्राप्त कर मनीष नलवाया को 586 मतों से पराजित किया जबकि तीसरे प्रत्याशी मुकेश दोशी को मात्र 228 मत प्राप्त हुए। ट्रेजरार पर सीए कर्तव्य शुक्ला ने 1064 मत प्राप्त कर यश गोल्डी वधावा को 492 मतो से पराजित किया। सात एक्जीक्यूटिव पदों पर अभिषेक कालरा, अंकित शर्मा, उरप्रीत कौर सोनी, श्रीमती डॉ. गिरिराज शर्मा पुजारी, हर्ष बुला, सुहेल अख्तर और रुपेंद्र मोदी विजयी रहे।

यूपीईएस के विद्यार्थी ने बनाई इनोवेटिव टेकनोलॉजी

उदयपुर। यूपीईएस में इंजीनियरिंग के एक छात्र अर्चित अग्रवाल को हाल ही में राष्ट्रपति भवन में आयोजित फेस्टिवल ऑफ इनोवेशन्स के दौरान गांधीयन यंग टेकनोलॉजिकल इनोवेशन अवॉर्ड 2018 से सम्मानित किया गया। अर्चित को उनकी इनोवेटिव टेकनोलॉजी के लिए 'मोस्ट इनोवेटिव प्रोडक्ट' कैटेगरी में यह सम्मान मिला है। उन्होंने ऑटोमोबाइल उद्योग के लिए यह अनूठी टेकनोलॉजी 'ऑन बोर्ड डायग्नॉस्टिक डेटा एनालिसिस सिस्टम' तैयार की है। अर्चित ने बताया कि प्रतियोगिता में देशभर के 500 कॉलेजों से 13000 से अधिक प्रोजेक्ट्स चुने गए। 'ऑन बोर्ड डायग्नॉस्टिक डेटा एनालिसिस सिस्टम' वाहनों के लिए कम लागत का युनिवर्सल सोल्यूशन है। इसके कई फायदे हैं जैसे एमरजेन्सी के मामले में वाहन की लोकेशन भेजना। यह टेकनोलॉजी वाहन दुर्घटना के दौरान व्यक्ति को मृत्यु से बचाने में सहयोगी हो सकती है।

डॉ. धींग को कुंदकुंद ज्ञानपीठ सम्मान

पिछले दिनों इन्दौर में आयोजित समारोह में डॉ. दिलीप धींग 'कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार-2017 से सम्मानित किये गये। यह सम्मान उनके शोधग्रन्थ 'समय और समयसार' पर दिया गया। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरेन्द्र धाकड, पूर्व कुलपति प्रो. ए.ए. अब्बासी, संयोजक डॉ. अजितकुमारसिंह कासलीवाल एवं कार्यकारी निदेशक प्रो. अनुपम जैन ने सम्मानित किया। इस अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. धींग का व्याख्यान प्रशंसित रहा।

कार्डिएक केयर प्लान लॉन्च

उदयपुर। भारत की अग्रणी लाइफ इंश्योरेंस कंपनियों में से एक एचडीएफसी लाइफ ने 'कार्डियक केयर प्लान' की शुरूआत की। सीनियर वाइस प्रेसिडेंट सुब्रत मोहंती ने कहा कि यह एक व्यापक और सस्ता कार्डियक केयर प्लान है, जो हृदय की 18 स्थितियों के लिए बीमा कवर प्रदान करता है। इन 18 शर्तों को उनकी गंभीरता के मुताबिक तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है- उच्च गंभीरता, मध्यम तीव्रता और हल्की गंभीरता श्रेणी के अनुसार बीमाकर्ता को एकमुश्त लाभ दिया जाता है।

308.28 लाख का बजट पारित

उदयपुर। उदयपुर नगर विकास प्रन्यास ने आवासहीन को आवास, पर्यटन एवं समग्र शहरी विकास के संकल्प के साथ 308.28 लाख का बजट वर्ष 2018-19 के लिए प्रस्तावित किया है। गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, यूआईटी अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली एवं अधिकारियों की मौजूदगी में 23 मार्च को ट्रस्ट की बैठक में आगामी वित्त वर्ष के अनुमानित आय-व्यय के प्रस्तावों को सर्वसम्मति से पारित किया गया। रवीन्द्र श्रीमाली ने बताया कि बजट में आवास के लिए 8282.24 लाख, रोड नेटवर्क, चौराहों के विकास के लिए 2781.59 लाख, आयड़ विकास के लिए 500 लाख, जलापूर्ति के लिए 1045 लाख, विभिन्न योजनाओं के लिए 3673 लाख, भूमि रुपान्तरण व नियमन योजनाओं के लिए 1363.89 लाख, कच्ची बस्ती के लिए 10 लाख, सहभागी योजनान्तर्गत 30 लाख, रोड़ सफाई हेतु 100 लाख तथा गैर योजना क्षेत्र के लिए 8872.24 लाख का प्रावधान किया गया है। बैठक में सचिव रामनिवास मेहता, आईएएस प्रशिक्षु मंजू चौधरी, सतीश श्रीमाली, आनंद प्रकाश, मुकेश जानी, अनित माथुर, संजीव शर्मा सहित अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण मौजूद थे।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

महावीर जयंती के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

PIMS की नई पहल

राजस्थान में निजी क्षेत्र में नाको, भारत सरकार के द्वारा
PPP मोडल के अंतर्गत

प्रथम एंटी रिट्रोवायरल (ART) सेंटर का प्रारम्भ

इस केन्द्र के माध्यम से निःस्वार्थ भावना से एच.आई.वी. संक्रमित एवं एड्स पीड़ित व्यक्तियों का निःशुल्क देखभाल एवं उपचार किया जाएगा साथ ही PPP मॉडल में स्वीकृत एच.आई.वी. परामर्श एवं जांच केन्द्र तथा यौन संक्रमण इलाज की सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध होगी

डायलिसिस की सुविधा एच.आई.वी. व हेपेटाइटिस के मरीजों के लिए उपलब्ध है।

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

लाभार्थियों को अन्तरंग ईलाज हेतु कैशलेस सुविधा

लाभार्थियों को अन्तरंग ईलाज हेतु कैशलेस सुविधा

प्रत्येक परिवार को प्रतिवर्ष चिन्हित सामान्य बीमारियों हेतु रु. 30 हजार
और चिन्हित गंभीर बीमारियों हेतु 3 लाख तक का स्वास्थ्य बीमा कवर

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का निःशुल्क उपचार

लाभार्थी का चयन राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) के अंतर्गत चयनित लाभार्थी (अर्थात 2रू. प्रतिकिलो गेंहु लेने वाले)

राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम *(RBSK)* योजना

ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, उमरड़ा

अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 (राज.) 0294-3010000 www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।